स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

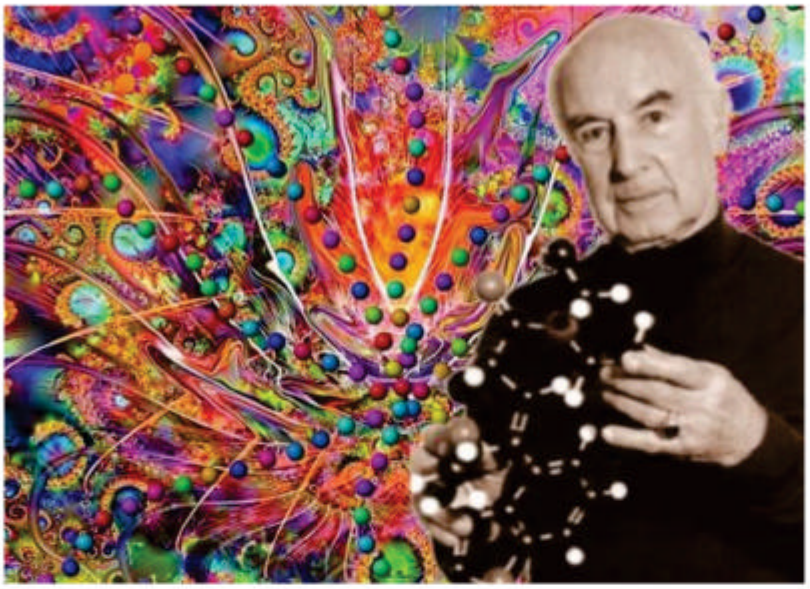

अल्बर्ट हॉफमैन और उनकी साइकिल की सवारी

अल्बर्ट हॉफमैन एक स्विस रसायन शास्त्री थे। उन्होंने लायसर्जिक एसिड डायएथिल एमाइड (एलएसडी) नामक दवा की खोज की थी। यह खोज एर्गोट फफूंद में औषधीय महत्त्व के पदार्थों की छानबीन के दौरान हुई थी। हॉफमैन को इस बात का भी श्रेय जाता है कि उन्होंने सबसे पहली 'एलएसडी-उड़ान' का अनुभव किया था।

हॉफमैन ने 1943 में अपनी ऐसी पहली 'उड़ान' तो महज़ इत्तफाक से की थी। अपनी बेसल स्थित प्रयोगशाला में इस रसायन का कुछ अंश उन्होंने गलती से उंगली पर गिरा लिया था। वे सनसनाती अप्रिय हालत में घर पहुंचे और ढेर हो गए। इसके बाद वे एक स्वप्निल अवस्था में अजीबोगरीब मानसिक छवियां देखते रहे।

उनका दूसरा प्रयोग ज़्यादा अरुचिकर था। इस बार उन्होंने जान-बूझकर एलएसडी की खुराक ली थी। उन्हें यकीन था कि वे बहुत कम मात्रा ले रहे हैं। लेकिन साइकिल पर घर जाते हुए इस दवा का तीव्र प्रभाव नज़र आया। यह हादसा मनोरंजन हेतु ली जाने वाली दवाइयों के क्षेत्र में काफी बदनाम रहा।

हो सकता है कि एलएसडी का उपयोग मनोचिकित्सा में संभव हो मगर आज तक इस औषधि के असर सांस्कृतिक ही रहे हैं। अलबत्ता, हॉफमैन ने इसका सेवन जारी रखा और इसके सावधानीपूर्वक इस्तेमाल की वकालत करते रहे।

वैसे ऐसी मानसिक असर वाली दवाइयों का स्वयं पर परीक्षण करने के मामले में हॉफमैन अकेले नहीं थे। अमरीकी रसायन शास्त्री एलेक्ज़ेंडर शुल्गिन ने ऐसे कई रसायनों को खुद पर आज़माया था। इनमें एमडीएमए (यानी एक्सटेसी) शामिल था। इसी प्रकार से हार्वर्ड के मनोवैज्ञानिक टिमोथी लीरी ने भी एलएसडी का खुद पर प्रयोग शुरू किया था। वे यह देखना चाहते थे कि क्या इसका उपयोग शराब छुड़वाने में किया जा सकता है। वैसे जब लीरी ने यह कहना शुरू किया कि एलएसडी का उपयोग आध्यत्मिक प्रकाश प्राप्ति के लिए जा सकता है, तब उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा था।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी